RNI/MPHIN/2013/61414

UGC Care Listed

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

दशम वर्ष, षष्ठ अंक

जनवरी – फरवरी 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

75. मनुस्मृतिकालीन समाज में महिलाओं के स्थान	सुव्रत गायेन	324
76. ईश्वर प्रणिधान-ईश्वर प्राप्ति का सरल मार्ग	अनुज कुमार, डॉ. मनोज कुमार टाक	329
77. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गाँधी की महत्ता एवं प्रासंगिकता	अरुण कुमार	334
78. स्वामी विवेकानंद के सामाजिक एवं शैक्षिक चिंतन का विश्लेषणात्मक अध्ययन	बृजभूषण राय, डॉ. आशीष कुमार बाजपेयी	339
79. 21 वीं सदी में महर्षि पतंजलि के क्रियायोग की महत्ता	नेहा बिष्ट, डॉ. भावना श्रीवास्तव	344
80. वेदों मे पर्यावरण शोधन हेतु यज्ञ का महत्व : एक विवेचनात्मक अध्ययन	उमा साह चौधरी, डॉ. मलिक राजेंद्र प्रताप	347
81. मानव जीवन में पुरुषार्थ और आध्यात्मिक विकास का सम्बन्ध	शक्ति सिंह , डॉ. विकास आर्य, डॉ. अरुण कुमार सिंह	350
82. स्वास्थ्य रक्षण में योग का महत्व	सूरज सिंह, डॉ. मलिक राजेन्द्र प्रताप	355
83. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन	राकेश कुमार, प्रो., (डॉ.) मोहन सिंह पंवार	358
84. भारत-श्रीलंका संबंध एवं चीन हित	नवीन कुमार	362
85. व्यक्तित्व एवं मानसिक स्वास्थ्य पर कोविड-19 महामारी की प्रतीति	डॉ. योगेन्द्र बाबू, डॉ. हरीश पाण्डेय	366
86. सामान्य एवं श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. अनामिका श्रीवास्तव, अवनीश कुमार पांडे	372
87. मनोविकारों के परिप्रेक्ष्य में योग का अध्ययन	प्रकाश चन्द्र शर्मा, प्रो.(डॉ.) सरस्वती काला	376
88. साहित्य और समाज का अंत:संबंध	किरण चौधरी	379
89. शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन	कुसुम सिंह, डॉ. माधवी पांडे	385
90. गणेश पाइन: एक रहस्यवादी चित्रकार	शोभना	390
91. उच्चतर माध्यमिक स्तर की बालिकाओं की शिक्षा पर प्रभाव डालने वाले आर्थिक कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. एन.के. कौशिक, उमा चौरसिया	392
92. ग्रामीण किशोरियों के व्यक्तित्व विकास पर अध्ययन	प्रेरणा, प्रो.(डॉ.) सरस्वती काला	399
93. मानव जीवन में प्राकृतिक चिकित्सा का महत्व	सुनीता रावल, डॉ. मलिक राजेंद्र प्रताप	402
94. महिलाओं में पी.सी.ओ.डी. पर एक्यूप्रेशर के प्रभाव का अध्ययन	अर्चना दुबे, प्रो.(डॉ.) सरस्वती काला	406
95. व्याकरणिक प्रकृति एवं प्रत्यय का दार्शनिक विमर्श	डॉ. लेखराम दन्नाना	411
96. पंचसन्ध्य:	डॉ. सुमन कुमारी	414
97. दलितोत्थान में लोहिया समग्र ग्राम विकास योजना का प्रभाव	डॉ. वरुण कुमार उपाध्याय	419
98. वामनावतार की यथार्थता	डॉ. सुनीति आर्या	428
99. शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन	श्यामल कुमार यादव, प्रो., (डॉ.) मोहन सिंह पंवार	430
100. मनुष्य जीवन में कर्मयोग का महत्व	डॉ.भावना श्रीवास्तव, विजयलक्ष्मी	434
101. अष्टांग योग क्या जीवन की हर समस्या का समाधान है?	सुनील कुमार, डॉ. मनोज टाक	441
102. महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर योगासन, प्राणायाम और ध्यान का परिणाम	डॉ. जिज्ञेश बी. पटेल	444
103. विदिशा जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों व शिक्षिकाओं की निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम (2009) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन	सत्यम शर्मा, डॉ. एन.के. कौशिक	447
104. प्रतापविजय नाटक एवं खण्डकाव्य की राष्ट्रभावनापरक सूक्तियों की समीक्षा	डॉ. मुरली धर पालीवाल	452
105. कक्षा 11वीं में अध्ययनरत वाणिज्य एवं कला संकाय के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन	प्रो., (डॉ.) मोहन सिंह पंवार, कुमार गौरव	456
106. भास के प्रतिमा नाटक में परिलक्षित हुआ पर्यावरण का विचार	डॉ. अर्णव पात्र	460
107. विश्वग्राम की परिकल्पना में अनुवाद की प्रासंगिकता	डॉ. एच.ए. हुनगुंद	462
108. नव्यनैयायिक परम्परा में आचार्य जगदीशतर्कालंकार एवं उनका योगदान	डॉ. संजय कुमार दुबे	464
109. श्रव्यकाव्य में स्तोत्रकाव्य : एक अध्ययन	रंजेश्वर झा	469
110. स्कन्दपुराणान्तर्गत अवन्ती-खण्ड में प्रयुक्त संयुक्त क्रिया-रूप	डॉ. आशा, विकास कुमार	473

ISSN 2278 - 0327

प्रतापविजय नाटक एवं खण्डकाव्य की राष्ट्रभावनापरक सूक्तियों की समीक्षा

डॉ. मुरली धर पालीवाल
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,उदयपुर, राजस्थान

भारतीय काव्यपरम्परा सर्वदा यह गुणगान करती है कि कविवाणी सर्वोत्कृष्ट होती है। काव्यप्रकाश का मंगलाचरण, '*कवय: क्रान्तदर्शिन:*' एवं '*कविर्मनीषी परिभू: स्वयम्भू:*' जैसी सूक्तियाँ इस तथ्य की पोषिका हैं। काव्यशास्त्रीय परम्परा में तो कवि को काव्यसंसार का प्रजापति कहा गया है।[1] कवि को उत्कृष्ट काव्यरचना करने के लिए एक श्रेष्ठ कथा एवं नायक आदि की आवश्यकता होती है। यह बात अनेक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में प्रतिपादित की गई है। रामायण और महाभारत उपजीव्य ग्रन्थों के रूप में विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं लेकिन कवि कल्पना रचित या इतिहास प्रसिद्ध कथानक को आधार बनाकर भी काव्यप्रणयन में प्रवृत्त हो सकता है। कवियों की यह काव्यप्रणयन वृत्ति वीरता के सर्वोच्च प्रतिमान मेदपाटाधीश्वर महाराणा प्रताप की ओर भी सहज आकृष्ट होती है। वीररस में सिद्धहस्त कवियों के लिए महाराणा प्रताप एक उत्कृष्ट नायक है। संस्कृतसाहित्य में महाराणाप्रतापाश्रित काव्यों की एक दीर्घ श्रृंखला है। महाकाव्य, खण्डकाव्य एवं नाटक आदि अनेक विधाओं में उपनिबद्ध महाराणा प्रताप का जीवनचरित्र अद्यावधि प्रासंगिक एवं प्रेरणादायी है। उनका यह चरित्र शूरता, वीरता एवं स्वतन्त्रता की भावना का आदर्शरूप है।

प्रस्तुत शोधपत्र में महाराणाप्रतापाश्रित 'प्रतापविजय' नाम की दो काव्यरचनाओं को आधार बनाया गया है। इनमें से एक 'प्रतापविजयम्' नामक नाटक की रचना मूलशंकर माणेकलाल याज्ञिक ने 1931 ई. में की।[2] यह नौ अंकों में विभक्त है। दूसरी काव्यरचना 'प्रतापविजय:' नाम का एक खण्डकाव्य है। इसके रचयिता ईशदत्त है तथा इसमें 170 पद्य हैं। कवि ईशदत्त का जीवनकाल अल्पल्प (1915 ई. से 1945 ई.) रहा है।[3]

ये दोनों काव्यरचनाएँ आङ्ग्ल शासन के परतन्त्रता काल में लिखी गई थी अत: तत्कालीन चुनौतियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप इन रचनाओं में स्वतन्त्रता एवं राष्ट्रप्रेम जैसे मूल्य विशेषरूप से मुखरित हुए हैं। उस समय का एक बड़ा कविसमुदाय जनमानस को राष्ट्रभावना से ओतप्रोत कर रहा था। महाराणा प्रताप जैसे राष्ट्रनायक पर आधारित इन रचनाओं ने भी इस भावना को जगाने में विशेष योगदान दिया हैं। इन रचनाओं में प्रसङ्गवश अनेक राष्ट्रभावनापरक सूक्तियों का चित्रण हुआ है। इन सूक्तियों के माध्यम से '*रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्*'[4] इत्यादि प्रकार का व्यवहारज्ञान सरलतया एवं सरसतया हो जाता है। ये सूक्तियाँ मानवीय व्यवहार को प्रभावित करने में विशेष स्थान रखती हैं –

अपूर्वाह्लाददायिन्य उच्चैस्तरपदाश्रया:।
अतिमोहापहारिण्य: सूक्तयो हि महीयसाम्॥[5]

वैसे संस्कृतसाहित्य को राष्ट्रभावना का जन्मदाता कहा जा सकता है। विश्व के आदिग्रन्थ ऋग्वेद से लेकर अद्यतन संस्कृत साहित्य में बहुधा राष्ट्रभावना का वर्णन हुआ है। राष्ट्र शब्द का व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है जो सुशोभित होता है– राजते इति। (राज् + ष्ट्रन्)[6] किसी राष्ट्र की यह शोभनीयता वहाँ रहने वाले लोगों के सद्विचार, सद्भाव, उच्च नैतिक आदर्श एवं समुचित जीवनमूल्यों आदि से सुरक्षित एवं वर्द्धमान रहती है।

शोधपत्र के विषयानुसार अब यहाँ राष्ट्र की उन्नति, सुरक्षा, स्वतन्त्रता आदि विषयों से सम्बधित प्रतापविजय नाटक एवं खण्डकाव्य की राष्ट्रभावनापरक सूक्तियाँ प्रस्तुत की जाती हैं। कवि ईशदत्त ने प्रतापविजय खण्डकाव्य के प्रारम्भ में सरस्वती देवी को सदा भारत में सदा निवास करने वाली बताते हुए[7] गंगा, यमुना एवं सरस्वती नदियों से तरङ्गित इस देश को सर्वप्रिय कहा है।[8] नदियों से सुशोभित भारतदेश का ऐसा ही सुन्दर वर्णन कविवर रमाकान्त शुक्ल ने भी किया है–

जाह्नवीचन्द्रभागाजलै: पावितं भानुजानर्मदा वीचिभिर्लालितम्।
तुङ्गभद्राविपाशादिभिर्भावितं भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्॥[9]

कवि ईशदत्त ने हिमालय पर्वत को इस राष्ट्र की शोभा बढ़ाने वाला चित्रित किया है–

व्यनक्ति लोके महिमाऽऽलय: सदा, यदीयलोकोत्तरतां हिमालय:।
स राजते भारत-भूतलाञ्चले, विराजते भारतवर्षनामभाक्॥[10]

महाकवि कालिदास ने भी कुमारसंभव महाकाव्य के मंगलाचरण में हिमालय पर्वत का ऐसा ही चारु वर्णन किया है।[11]

प्रतापविजय नाटक में कवि मूलशंकर याज्ञिक ने प्रसङ्गवश अनेक स्वतन्त्रतासम्बन्धी सूक्तियों को चित्रित किया है। सोने के पिंजरे में बन्द होने वाले पक्षी के उदाहरण से स्वतन्त्रता का महत्त्व विशेष रूप से बताया गया है–

महिषी – आर्यपुत्र स्वातन्त्र्यमेव राजन्यस्य वीर्यम्। अपि च
नानारसै: स्वादुफलै: सुपोषित: स्नेहेन राजन्यकुलोपलालित:।
शुकोऽपि चामीकरपञ्जरश्रितो न पारतन्त्र्यं बहु मन्यते खग:॥[12]

प्रतापविजय नाटक के प्रथम अंक में जब मानसिंह महाराणा प्रताप को अकबर की अधीनता स्वीकार करने का सन्देश कहता है तब स्वतन्त्रता के परम पुजारी महाराणा प्रताप के मुख से स्वतन्त्रता सम्बधी उनके हृदयोद्गार इस प्रकार निकलते हैं–

– *स्वातन्त्र्यैकरस: परस्य वशतां यायात्प्रताप: कथम्।*[13]
– *तेजस्विन: क्षत्रगुणे प्रतिष्ठिता न चार्थकामापहतात्मविक्रमा:।*
प्राणान्तकष्टेऽप्यचला दृढव्रता नैवाद्रियन्तेऽन्यनरेन्द्रशासनम्॥[14]
– *प्राप्नोतु राष्ट्रं त्वचिराद्विनाशं कुलं समग्रं लयमेतु सद्य: ।*
सहस्रधाशु प्रविदीर्यतां वपु: स्वातन्त्र्यमेकं शरणं परं मे॥[15]
– *स्वातन्त्र्येऽपहृते त्रिविष्टपसुखं क्लेशाय मे केवलं*
तस्मिन्नेव सुरक्षिते वनचरैर्वासोऽपि तोषावह: ।
यामासाद्य कृतार्थतामुपगता धर्मच्युतास्त्वादृशा
नैनां क्षत्रवर: श्ववृत्तिमधमां प्राणात्ययेऽप्याश्रयेत्॥[16]

इसी प्रसङ्ग में महाराणा प्रताप का मन्त्री भी मानसिंह को ऐसा ही प्रत्युत्तर देता है –

– *तृणाय मत्वा सुतबन्धुवर्गान् राष्ट्रं समग्रं निजजीवितस्पृहाम्।*
प्रत्यर्थिविध्वंसविधौ विनिश्चिता: स्वातन्त्र्यरक्षैकपराश्चरन्ति॥[17]
– *आ बाल्याद्यावनेशप्रगतिपरिहतक्षात्रतेज:प्रभावो*
नानाभोगाधिकारैरनुगुणकवलै: पुष्टदेहान्तरङ्ग: ।
साशङ्कं तत्सपर्याऽवहितमतिरसौ मोदमान: श्ववृत्तौ
*राजन् स्वातन्त्र्यभावं कलयति हि कथं य: पराधीनवृत्ति:॥*18

स्वतन्त्रताविषयक उपर्युक्त भावों को निम्नलिखित सूक्तियाँ भी समर्थन करती हैं–

– *कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्।*[19]
– *स्वस्वजीवनदानेन रक्षणीयैव जन्मभू:।*
आदत्ते हि महद् वस्तु स्तोकत्यागेन बुद्धिमान्॥[20]

उपर्युक्त स्वातन्त्र्य भाव को हृदय में संजोते हुए देशरक्षा के लिए लड़ना साहस का काम होता है। इस कार्य को वीरपुरुष ही कर सकते हैं। यह कायर लोगों के सामर्थ्य की बात नहीं होती है। अकबर के साथ युद्ध की निश्चितता को देखते हुए महाराणा प्रताप इसी प्रकार वीरों से युद्धाह्वान करते हैं–

– *आयातु स प्रकटयन् बलमत्युदारं कर्तुं समर्थ इह यो व्रतमासिधारम्।*
क्रीडास्थलीव किल य: समरस्थली स्यात्, किं वा विषाद इह यस्य कृते प्रसाद:॥[21]
– *आयातु स प्रबलवानिह साऽभिमानं, कृत्वा स्वदेश-चरणे मृदु-मौलि-दानम्।*
वक्ष: क्षताज्जनितशोणित-बिन्दुभिर्य:, निश्शङ्कमङ्कयतु गौरवगर्वगानम्॥[22]

जो देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ते हैं, प्राणार्पण करते हैं वे लोक में स्वत: वन्दनीय हो जाते हैं। इसी भाव को महाराणा प्रताप के सन्दर्भ में कवि ईशदत्त ने इस प्रकार कहा है –

क्षणे क्षणे यस्य रणे रतिर्भवेत् पदे पदे यो विनिपातयेदरीन्।
तदद्य किं विस्मयकारणं बुधा:! गृहे गृहे सम्प्रति चेत्स पूज्यते॥[23]

कवि मूलशंकर याज्ञिक ने भी महाराणा प्रताप के मुँह से स्वतन्त्रता सेनानियों की सम्माननीयता बताई है–

हुत्वा देहं निजं ये समरहुतवहे प्रस्थिता: पुण्यलोकां-
स्तेषां वीरोत्तमानां समुदितयशसामन्वये ये प्रसूता:।
मत्युत्कर्षप्रतापप्रमथितरिपवो ये पुनर्नीतिदक्षा:
सर्वे ते राष्ट्रभक्ता नृपकुलविभवैर्माननीया यथार्हम्॥[24]

उपर्युक्त भावप्रसङ्ग में महात्मा गांधी के वचन भी उल्लेखनीय हैं- 'जिन्होंने अपनी देह को देशसेवा में ही जीर्ण कर दिया वे देहपात होने पर जन-मन से विस्मृत नहीं हो सकते, कभी नहीं मर सकते।'[25] देशरक्षा जैसे महनीय कार्य से विमुख रहने वाले लोगों के निन्दा भी प्रतापविजय खण्डकाव्य में प्रसङ्गप्राप्त रीति से की गई है –

तिष्ठन्तु ते निज-गृहे ललना-विलासा:, ये वारुणी-विषय-वञ्चकतैकदासा:।
ये जन्मनैव खल-कर्म समर्थयन्ति, प्रोच्चैर्बलं शुचि-कुलं च कदर्थयन्ति॥[26]

अपने स्वार्थवश राष्ट्र से द्रोह करने वाले नराधमों की निन्दा भी मानसिंह के व्याज से नाटक में प्राप्त होती है–

निष्कारणं हतधिय: स्वजनैर्विरोधं कृत्वाऽधमानपि परान् समुपासते ये।

कल्पद्रुमं सकलकामदुघं विमोहादुन्मूल्य ते विषतरुं स्वकुले वपन्ति॥ [27]

अकारणद्वेषपरो नराधम: परोदयाप्लुष्टनिजान्तरङ्ग: ।

नीत्वा स्वपक्षे च्छलतो बलीयस: पैशुन्यशस्त्रेण हिनस्ति सुव्रतान् ॥[28]

ऐसे देशद्रोहियों के विषय में अमर शहीद अशफ़ाक उल्ला खां के वचन भी स्मरणीय है –

न कोई इंगलिश न कोई जर्मन न कोई रशियन न कोई टर्की,
मिटाने वाले हैं अपने हिंदी जो आज हमको मिटा रहे हैं।[29]

इसी विषय में यह अग्रेंजी लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है–

"Breakers of home can not be the makers of Nations." [30]

प्रतापविजय नाटक में प्रशासक वर्ग एवं जनता के अन्तर्सम्बन्धों पर भी सूक्तियाँ प्राप्त होती हैं। यह मजबूत अन्तर्सम्बन्ध राष्ट्र की सुदृढता हेतु आवश्यक होता है। न्यायी एवं गुणी राजा की वाञ्छा प्रजा को भी सर्वदा रहती है –

कृताभिषेकं गुणिनं महौजसं न्यायप्रवृत्तं व्यसनेष्वसक्तम्।
स्वयंवरेव प्रकृति: प्रतारिताप्यर्थोपजापैर्न जहात्यधीश्वरम्॥ [31]

राजोचित गुणों से सम्पन्न राजा के उपकारों की निष्कृति भी प्रजा के लिए असम्भव होती है –

ईद्ध: क्षात्रबलौजसा निजसुखे वीतस्पृहो योऽनिशं
धर्मस्थ: परिपालयत्यभिनवस्नेहेन सर्वा: प्रजा:।
लोकोपद्रवकारिणां प्रमथने जागर्ति यो दुष्कृतां
राज्ञस्तस्य विधीयते जनिशतैर्नैव क्वचिन्निष्कृति:॥[32]

किसी राष्ट्र के निर्माण में राजा के उत्तरदायित्वों के साथ प्रजा के भी उत्तरदायित्व होते हैं। इसी बात के समर्थन में प्रतापविजय नाटक में महाराणा प्रताप के मुख से दो सूक्तियाँ प्रस्फुटित होती हैं–

- *पौरजनानुरागायत्ता हि राष्ट्रसम्पद:।* [33]
- *यत्सत्यं प्रकृत्यनुरागायत्ता हि राष्ट्रसम्पद:।* [34]

इसी प्रसंग में यह पंक्ति भी अवलोकनीय है –'देश की रक्षा राजा की सेना नहीं करती। देश की प्रजा करती है।' – लक्ष्मी नारायण मिश्र [35]

प्राचीन राजनीतिशास्त्रों में प्रतिपादित साम-दान-भेद-दण्ड नीति भी यहाँ दृष्टिगोचर होती है–

सामोपचारैर्नृपतिं समप्रभं दानेन हीनं कुलधर्मनिष्ठम्।
सत्त्वाधिकं भेदनयेन चोद्धतं दण्डेन भिन्नप्रकृतिं वशं नयेत्॥[36]

राष्ट्र सुरक्षा हेतु शत्रुओं से प्रतीकार करते समय क्या सावधानी रखी जाए जाए इस सम्बन्ध में '*आर्जवं हि कुटिलेषु न नीति:*।'[37] जैसी नीतिपूर्ण सूक्ती भी प्राप्त होती है –

असत्यसन्धेषु जनेषु साधुता हिंस्रेष्वहिंसा पिशुनेषु तथ्यम्।
दया कृतघ्नेषु खलेषु चार्जवं सद्यो विनाशाय भवन्ति भूभृताम्॥[38]

महाराणा प्रताप जैसे नायक शत्रु को भी छलपूर्वक जीतना नहीं चाहते हैं –

स्ववीर्यविश्रम्भहतारिदुर्नया धर्मार्थमात्मन्यपि निर्गतस्पृहा: ।
नैवोत्सहन्ते विषमं स्थिता अपि कूटाभियोगानभिमन्तुमीश्वरा:॥[39]

राष्ट्र के समुचित संचालन के लिए सभी को अपने निर्धरित कर्त्तव्यों एवं वर्णाश्रमधर्म का पालन भी करना चाहिए। इसी सम्बन्ध में दो सूक्तियाँ प्रतापविजय नाटक एवं खण्डकाव्य में आती हैं–

- *आम्नायार्थप्रसितमतयो ब्राह्मणा: सिद्धमन्त्रा:*
  संपद्यन्तां नरपतिगणा: क्षात्रतेज: समिद्धा:।
  वैश्या: सर्वे नवनिधियुता: कारव: कारुदीप्ता:
  स्वातन्त्र्यश्रीर्विलसतुतरां विश्वतो भारतेऽस्मिन्॥ [40]
- *धिग्ब्राह्मणं तमथ य: श्रुति-मन्त्रहीन:, धिक् क्षत्रियं तमथ*
  य: समरेऽतिदीन:।
  धिग् वैश्यमर्थिजनशोषणमात्र-पीनं, शूद्रं च धिक्
  सुजनसेवकताविहीनम्॥ [41]

राष्ट्रसेवा के कार्य में सभी की अपनी महत्ता एवं उपयोगिता होती है। सभी अपने योग्य कार्य को करते हुए राष्ट्र की उन्नति में सहयोग दे सकते हैं –

अल्प: कदाचिन्महता सुदुष्करं कार्ये महत्साधयितुं भवत्यलम्।
काष्ठैकपोतेन सुखोत्तर: प्रभो हिरण्यनावा जलधिर्न तीर्यते॥[42]

धैर्य को भी राष्ट्र निर्माण में उपयोगी गुण बताया गया है– 'धैर्यमूला हि सर्वा: सम्पद:।' [43] इसी बात का समर्थन हरिकृष्ण प्रेमी भी करते हैं– 'राष्ट्र को जोश, उत्तेजना और भावनाशीलता की जितनी आवश्यकता है, उतनी विवेक, धैर्य और दूरदर्शिता की भी।'[44] नारियों के प्रति समुचित सम्मान की चर्चा भी प्रतापविजय नाटक में प्रसंगतया प्राप्त होती है –'*न कदाचित् परदारापहरणमनुमन्वते तपनकुलसंभवा इति*।' [45]

इस प्रकार भारत की स्वतन्त्रता के पूर्व बीसवीं शताब्दी में लिखी गई प्रतापविजय नाम की इन दो रचनाओं में राष्ट्रसमर्चक महाराणा प्रताप के उदात्त जीवनचरित्र को प्रस्तुत करते हुए कवियों के द्वारा तत्कालीन जनमानस को राष्ट्रभावना से आन्दोलित किया गया। महाराणा प्रताप का व्यक्तित्व ही ऐसा है कि उनके बारे में पढ़कर और जानकर कोई भी व्यक्ति आश्चर्यचकित एवं राष्ट्र के

प्रति समर्पित हो सकता है। उनका यह आदर्श चरित्र सदियों-सदियों तक प्रासंगिक एवं प्रेरणादायी है। उनके जीवनमूल्यों की उपादेयता वर्तमान समय में भी बहुत अधिक महत्त्व रखती है। उपर्युक्त रचनाद्वय के माध्यम से वर्णित की गई राष्ट्रभावनापरक सूक्तियाँ अनमोल मौक्तिक हैं। इन सूक्तियों के माध्यम से राष्ट्रोन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. लुडविक स्टर्नबाख : महासुभाषितसंग्रहः, विशवेश्वरानन्द वैदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट, होशियारपुर, 1976 ई.
2. सं. राजेन्द्र नाणावटी : मूलशङ्कर-नाट्यत्रयी (संयोगिता-स्वयंवरम्, छत्रपतिसाम्राज्यम्, प्रतापविजयम्), राष्ट्रियसंस्कृत-संस्थानम्, नई दिल्ली, 2010 ई.
3. सं. शिवकुमार त्रिपाठी; विशुद्धानन्द त्रिवेदी : प्रतापविजयः (ईशदत्त), शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
4. शेषराजशर्मा : साहित्यदर्पणः, चौखंबा कृष्णदास अकादमी, वारणसी, 2010 ई.
5. श्याम बहादुर वर्मा : बृहत् विश्व सूक्ति कोश, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006 ई.
6. सृजन झा; प्रो. मदनमोहन झा : शब्दकल्पद्रुमः, एप, गूगल प्ले स्टोर
7. रमाकान्त शुक्ल : भाति मे भारतम्, देववाणीपरिषद्, दिल्ली, 1980 ई.
8. प्रद्युम्नपाण्डेय : कुमारसम्भवम् (कालिदास), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2012 ई.
9. अम्बिकादत्त व्यास : शिवराजविजयः, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2010 ई.
10. हरिदास सिद्धान्तवागीश : मिवारप्रतापम्, सिद्धान्तयन्त्र, कलकत्ता, 1354 बंगाब्द
11. देवर्षि सनाढ्य : नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष), चौखम्बा कृष्णदास अकेडमी, वाराणसी, 2013 ई.

सन्दर्भ सूची -

1. महासुभाषितसंग्रह, 2000
2. प्रतापविजयम्, पृ. प्रस्तावना, xxvi
3. प्रतापविजयः, पृ. प्रस्तावना, द्व
4. साहित्यदर्पण, पृ.19
5. बृहत् विश्व सूक्ति कोश, पृ.1263
6. शब्दकल्पद्रुमः, राष्ट्रम्
7. प्रतापविजयः, 20
8. तत्रैव, 27
9. भाति मे भारतम् , 9
10. प्रतापविजयः, 26
11. कुमारसंभवम् , 1.1
12. प्रतापविजयम्, 4.14
13. तत्रैव, 1.11
14. तत्रैव, 1.10
15. तत्रैव, 1.21
16. तत्रैव, 1.22
17. तत्रैव, 1.17
18. तत्रैव, 1.26
19. शिवराजविजयम्, प्रथम विराम, चतुर्थ निःश्वास
20. मिवारप्रतापम्, 1.24
21. प्रतापविजयः, 100
22. तत्रैव, 101
23. तत्रैव, 41
24. प्रतापविजयम्, 9.6
25. बृहत् विश्व सूक्ति कोश, पृ. 463
26. प्रतापविजयः, 99
27. प्रतापविजयम्, 1.4
28. तत्रैव, 1.28
29. बृहत् विश्व सूक्ति कोश, पृ. 462
30. तत्रैव, पृ. 940
31. प्रतापविजयम्, 3.7
32. तत्रैव, 8.8
33. तत्रैव, 4.18 से पूर्व
34. तत्रैव, 9.5 के बाद
35. बृहत् विश्व सूक्ति कोश, पृ. 470
36. प्रतापविजयम्, 4.3
37. नैषधीयचरितम्, 5.103
38. प्रतापविजयम्, 2.2
39. तत्रैव, 2.13
40. तत्रैव, 9.8
41. प्रतापविजयः, 98
42. प्रतापविजयम्, 4.13
43. तत्रैव, 8.4 के बाद
44. बृहत् विश्व सूक्ति कोश, पृ. 938
45. प्रतापविजयम्, 4.2 के बाद